स्नेह

टाइपिंग बुक

मंगल इनस्क्रिप्ट और क्रुतिदेव फॉउन्ड सीखने के लिए सर्वोत्तम पुस्तक

हिन्दी टाइपिंग

समस्त टंकण प्रतियोगिता में सफलता,
टंकण सीखने एवं गति बढ़ाने
के लिये सर्वोत्तम पुस्तक

लेखक :

रत्नेश कुमार

प्रधानाचार्य

लिमका बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डधारी

स्नेह टाइपराइटिंग एण्ड कम्प्यूटर इन्स्टीट्यूट

474/406, शाहगंज, इलाहाबाद - 211003

सर्वाधिकार सुरक्षित

मोबाइल: 8081717569

www.latestcarernews.com

स्नेह टाइपिंग बुक

समस्त टंकण प्रतियोगिता में सफलता, टंकण सीखने एवं गति बढ़ाने के लिए सर्वोत्तम किताब

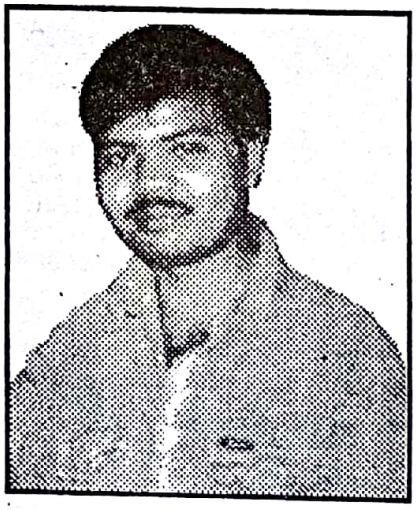

लेखक

रत्नेश कुमार

प्रधानाचार्य

(लिमका बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)

स्नेह टाईपराइटिंग इंस्टीट्यूट

474/406, शाहगंज, इलाहाबाद

नन्द लाल वर्मा

प्रधानाचार्य

वर्मा टाईपराइटिंग इंस्टीट्यूट

109, विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद

Price Rs 50/-

COPY RIGHT RESERVED

www.latestcarernews.com

महापौर डा० के.पी. श्रीवास्तव ने श्री रत्नेश कुमार के 245 घंटे लगातार टाइप करने के रिकार्ड के पूरे होने पर जूस पिलाकर समापन किया

नगर प्रमुख डा० के.पी. श्रीवास्तव ने रत्नेश कुमार के रिकार्ड पूरे करने पर जूस पिलाते हुए

www.latestcarernews.com

कपिल मुनि करवरिया
जिला पंचायत अध्यक्ष
कौशाम्बी

दिनांक : 20-04-2001

शुभकामना संदेश

श्री रत्नेश कुमार जी का नाम लिमका बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड एवं गिनीज़ बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज होने पर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इन्होंने 26 नवम्बर सन् 2000 से 6 दिसम्बर सन् 2000 तक (245 घंटे) लगातार टाइप करके अपना नाम लिमका बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड एवं गिनीज़ बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज कराकर पूरे भारत का नाम रौशन किया है एवं इलाहाबाद के गौरव को बढ़ाया है।

मैं कपिल मुनि करवरिया, जिला पंचायत अध्यक्ष, कौशाम्बी श्री रत्नेश कुमार को पूरे भारत वर्ष एवं इलाहाबाद की तरफ से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ एवं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

कपिल मुनि करवरिया
जिला पंचायत अध्यक्ष
कौशाम्बी

के.पी. श्रीवास्तव
नगर प्रमुख
नगर निगम, इलाहाबाद

दिनांक : 10-02-200

बधाई पत्र

श्री रत्नेश कुमार जी ने 245 घंटे (26 नवम्बर सन् 2000 से 6 दिसम्बर सन् 2000) तक लगातार टाइपराइटर चलाकर अपना नाम लिमका बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड एवं गिनीज़ बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज करवा कर इलाहाबाद शहर का ही नहीं, बल्कि पूरे भारत का नाम विश्व में रौशन किया है। इस उपलब्धी के लिए श्री रत्नेश कुमार ने अथक परिश्रम, आत्मबल एवं आत्म संयम का एक अनूठी मिशाल पूरे भारतवर्ष एवं इलाहाबाद की जनता को दिया है।

श्री रत्नेश कुमार की इस उपलब्धी के लिये मैं के.पी. श्रीवास्तव, नगर प्रमुख नगर निगम इलाहाबाद इनको शुभकामना देते हुए इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं एवं पूरे इलाहाबाद की जनता की तरफ से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

के.पी. श्रीवास्तव
नगर प्रमुख
नगर निगम इलाहाबाद

www.latestcarernews.com

टाइपराइटर का संक्षिप्त इतिहास

टाइपराइर (Typewriter) का आविष्कार रानी ऐनि के समय सन् 1714 ई0 में श्री हेनरी मिल ने किया था। 1729 ई0 में न्यूयार्क (अमेरिका) के बर्ट महोदय ने इसे छापने के टाइपराइटर का रूप दे कर इसे 'टाइपोग्राफर' के नाम से विभूषित किया। 1843 ई0 में श्रीमान् चार्ल्स थर्बर ने इसे बिक्री योग्य बनाया। परन्तु कुछ वर्ष पश्चात् प्रेट नामक सज्जन ने इसमें सुधार कर इसे अधिक जनोपयोगी बनाकर 'टाइप-बार राइटिंग मशीन' का नाम दिया। इस कॉल से निरन्तर टाइपराइटर में परिवर्तन होता आ रहा है। इसका आधुनिक रूप देने का श्रेय सर्वश्री ई0 रेमिंगटन एण्ड सन्स, न्यूयार्क को है।

सन् 1886 ई0 में मे0 रेमिंगटन कम्पनी ने टाइपराइटर निर्माण करने के सम्पूर्ण अधिकारी खरीद कर सन् 1912 से यूरोप, अमेरिका, भारत तथा अन्य देशों में उसकी बिक्री आरम्भ कर दिया। उसी समय से "रेमिंगटन" टाइपराइटर प्रचलित हो गया। रेमिंगटन कम्पनी प्रत्येक वर्ष कुछ न कुछ सुधार इसमें करती रहती हैं। आज कल जो टाइपराइटर देखने को मिलते हैं यह उसी सुधार का परिणाम है।

बाजार में रेमिंगटन के अलावा अन्य कम्पनियों जैसे हाल्दा, गोदरेज, अन्डरवुड आदि के भी टाइपराइटर देखने में आते हैं लेकिन कुन्जी पटल (Key Board) सब के एक ही क्रम में एक मानक (Standard) के होते हैं।

कुछ ऐसे टाइपराइटर भी तैयार हो चुके हैं जिसमें अंकगणित के समस्त चिन्ह लगे हैं जिनके द्वारा बिल, बीजक, स्टेटमेण्ट तथा बैलेन्स शीट आदि बड़ी आसानी से टाइप किया जा सकता है। इनका पत्रवाहक (Carriage) भी कागज के हिसाब से बड़ा छोटा आता हैं।

स्टैण्डर्ड टाइपराइटर को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में कठिनाई होने के कारण पोर्टेबिल (छोटे व हल्के) टाइपराइटर भी आते हैं जिनको हाथ में आसानी से लटका कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है।

www.latestcarernews.com

चिन्ह टाइप करने का निर्देश

प में ़ लगाने पर	(फ) बनेगा
ट में ् और ़ लगाने पर	(ट्र) बनेगा
फ़ में ़ लगाने पर	(फ़) बनेगा
- में । लगाने पर	(+) बनेगा
१ में . लगाने पर	(?) बनेगा
/ में ः लगाने पर	(%) बनेगा
- में ः लगने पर	(÷) बनेगा
; में . लगाने पर	(;) बनेगा
। में . लगाने पर	(!) बनेगा

नोट :- प्रत्येक आधे अक्षर को । (पूरक मात्रा) में पूरा करें।
जैसे - ध् + । = ध , ध् + । = ध

निम्न शब्द को इस प्रकार टाइप करें

१. उद्देश्य	१. उद्‌देश्य
२. मिट्टी	२. मिट्‌टी
३. उत्तरी	३. उत्तरी
४. उन्नति	४. उन्नति
५. व्यक्त	५. व्यक्त
६. व्यक्ति	६. व्यक्ति
७. स्रोत	७. स्त्रोत
८. ढक्कन	८. ढक्कन
९. कङ्काल	९. कंकाल
१०. त्रिलोकी	१०. त्रिलोकी
११. लिफ्ट	११. लिफ्‌ट

खड़ी लाईन खींचने का नियम

सर्वप्रथम बायें हाथ के अंगूठे से स्पेस को दबाये हुये बायें ही हाथ के मध्यम उँगली से एक की गिनती को टाइप करते जाये तथा दायें हाथ से रोलर को पीछे की ओर घुमाते जायें।

सावधानी :- अगर कागज पर लाईन हल्की लगे तो रीबन को दायें हाथ से थोड़ा घुमा दें।

www.latestcarernews.com

टंकण सीखते समय छात्रों को निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए

1. टंकण करते समय सीधे होकर बैठे, पीठ झुकाकर बिल्कुल नहीं बैठना चाहिए।
2. टंकण के प्रत्येक बटन "की" को हल्के स्ट्रोक से टाइप करना चाहिए।
3. गलती हो जाने पर "पीछे हटाव" कल का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
4. मैटर (जिसको टाइप करना हो) को हमेशा अपनी बाई ओर रखना चाहिए।
5. टंकण करते समय गलती न होने का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
6. गलती हुए शब्द को काटना नहीं चाहिए और न ही उस शब्द को पूरा करना चाहिए बल्कि उसके अगले शब्द को टाइप करना चाहिए।
7. टाइप करते समय अक्षर पटल ("की बोर्ड") तथा छप रहे मैटर को नही देखना चाहिए, सिर्फ जिस विषय को टाइप करना हो उसे ही देखना चाहिए।
8. टाइप करते समय किसी प्रकार की बात नहीं करना चाहिए।
9. मस्तिष्क एवं मन को एकाग्र रखकर टाइप करना चाहिए।
10. टंकण गति टाइप करने के 20 मिनट बाद ही गलती को ध्यान मे रखकर बढ़ाना चाहिए।

टंकण परीक्षा देते समय निम्न तकनीकी बातों पर ध्यान देना अति आवश्यक है

1. पेपर लगाते समय "पेपर रिलीज लीवर" का प्रयोग करना चाहिए।
2. पेपर के बाई तरफ 1½ इंच का मार्जिन छोड़ना चाहिए।
3. पेपर लगाने के पश्चात् "पेपर साइड गाइड" को लगाना चाहिए जिससे दूसरा पेपर बदलने पर पेपर आगे पीछे न हो जायें।
4. दोहरा-अन्तर देकर टाइप करना चाहिए। इसके लिए लाईन स्पेस छड़ को 2 नं. पर लगाने से दोहरे अन्तर पर टाइप होगा।
5. "टाइप गाइड" में दो अक्षर फंस जाने पर "की" रिलीज बटन का प्रयोग करना चाहिए।
6. टाइप करते समय "टच इन्डीकेटर" को हमेशा सबसे ऊपर रखकर टाइप करना चाहिए।
7. पैराग्राफ हमेशा 5 या 7 स्पेस पर बनाना चाहिए।
8. टंकण परीक्षा देने से पूर्व सिर्फ आधा घंटा अभ्यास करने के पश्चात् परीक्षा देना चाहिए।
9. टंकण परीक्षा देते समय हाथ को अच्छी तरह धुलकर साफ़ कपड़ें से पोंछ लेना चाहिए।
10. टाइप करते समय "रीबन इन्डीकेटर" को 1, 3, एवं 4 नं० पर लगाकर टाइप करना चाहिए। 2 नं० पर स्टैन्सिल काटने का प्रयोग किया जाता है, इसलिये 2 नं० पर इसे नहीं लगाना चाहिए।

www.latestcarernews.com

हिन्दी टंकण सीखने का अभ्यास

मुख्य पंक्ति (बीच वाली लाइन) में चित्र के अनुसार उँगलियों को रखें।

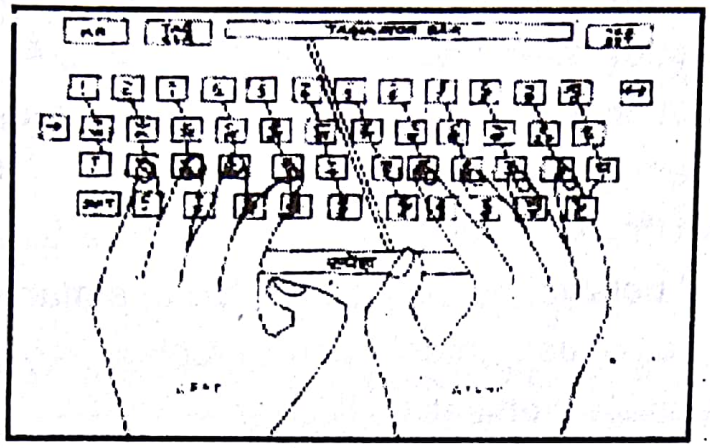

चित्रानुसार छात्र बायें हाथ द्वारा पहली उँगली को पीछे लाकर (ॅ) तथा पहली उँगली को वापस लाकर (ॅ) दूसरी उँगली से (क), तीसरी से (ि), चौथी उंगली से (ह) तथा चौथी ही उंगली को आगे लाकर (ी) टाईप करें। इसके पश्चात् दाहिने हाथ के अंगूठे से एक बार स्पेस को दबायें। चित्रानुसार दायें हाथ द्वारा पहली उंगली को पीछे लाकर (.) तथा पहली उंगली को वापस लाकर (श्) , दूसरी उंगली से (य), तीसरी से (स) तथा चौथी उंगली से (ा) तथा चौथी ही उंगली का आगे लाकर (र) टाईप करें।

अभ्यास - 1

निम्न अभ्यास को याद करें -

ॅ क ि ह ी . श् य स ा र ॅ क ि ह ी . श् य स ा र

ॅ क ि ह ी . श् य स ा र ॅ क ि ह ी . श् य स ा र

अभ्यास - 2

प्रत्येक शब्द को दो - दो लाइन टाइप करें -

केसर	हीरा	सेयर	कार	हरि	हक	हारे	सार	कहा	कहो
यार	राय	हेर	सही	कही	सिर	रिहा	केस	रही	सारी
सिया	हार	ससि	हेर	कहर	करि	साया	किया	कसार	होरी
सिहर	राही	सोराय	सायर	कहार	कायर	सराय	सियार	सोहर	सेहरा
सहारा	रहकर	रोकिये	सरकार	होसियार	रोक	रंक	यहीं		

www.latestcarernews.com

निम्न को 25 लाइन टाइप करें -

सरकार से कहा कि होसियार रहिये।

मुख्य पंक्ति पर रखी बाये हाथ की उंगली को ऊपर लाकर पहली उंगली से (ु), उसी उंगली से (ू) : दूसरी उंगली से (म), तीसरी से (त), चौथी उंगली से (ज) और चौथी ही उंगली से (ल) टाइप करें। दायें हाथ की पहली उंगली को ऊपर लाकर (,) तथा (ख), दूसरी उंगली से (च), तीसरी से (व), चौथी उंगली से (प) तथा उसी उंगली से (न) टाइप करें। ऊपर अभ्यास के प्रत्येक अक्षर टाइप करने के पश्चात् प्रत्येक उंगली को मुख्य पंक्ति पर वापस रखना चाहिए।

अभ्यास - 3

निम्न अभ्यास को याद करें -

ु म त ज ल , ख च व प न ु म त ज ल , ख च व प न
ू म त ज ल , ख च व प न ू म त ज ल , ख च व प न
ु म त ज ल , ख च व प न ु म त ज ल , ख च व प न

अभ्यास - 4

प्रत्येक शब्द को दो-दो लाइन टाइप करें -

कमल	सकल	नहर	नमक	मूरत	महल	ताज	चाय	मकर
जल	लेजर	सख्त	चाकू	नल	नहर	नाम	नीचे	परम
चेहरा	मेजर	होली	केतली	राजा	चोरी	जीवन	तुमको	तकिया
जिसको	लोहा	ख्याल	चाचा	चुनना	चेहरा	विहर	पावन	नायक
लकीर	कजरी	कोयल	तलाक	पावस	चाची	पिता	संख्या	पायल
जमीन	साजन	माला	मालती	अवतार	मारना	चालाकी	तहलका	कमजोर
कोयला	विराना	पारसी	पहचान	विराम	पिंजरा	चुराना	लालची	तिजोरी

निम्न को 25 लाइन टाइप करें -

महल चलकर पानी पीकर सो जाया करो, ख्याल मत करो

www.latestcarernews.com

मुख्य पंक्ति पर रखी बायें हाथ की पहली उंगली से (ऽ), दूसरी उंगली से (ग), तीसरी से (ब), चौथी उंगली से (अ) और चौथी ही उंगली से (इ) दायें हाथ की पहली उगली से (ध), दूसरी उंगली से (ण), तीसरी से (ए) चौथी उंगली से (उ) और चौथी ही उंगली से (द) टाइप करें। प्रत्येक अक्षर टाइप करने के पश्चात् अपने यथा स्थान (मुख्य पंक्ति) पर हाथ वापस रख लें।

अभ्यास - 5

निम्न अभ्यास को याद करें –

ऽ ग ब अ इ ध ण ए उ द
ऽ ग ब अ इ ध ण ए उ द
ऽ ग ब अ इ ध ण ए उ द

ऽ ग ब अ इ ध ण ए उ द
ऽ ग ब अ इ ध ण ए उ द
ऽ ग ब अ इ ध ण ए उ द

अभ्यास - 6

प्रत्येक शब्द को दो - दो लाइन टाइप करें -

गूलर	करम	ऐनक	राग	गज़ब	बाबू	चेक	मिस्र
रेल	हेला	नाक	इसी	आज	बेसन	बेबस	आम
नरम	लगन	उमर	कलयुग	नारद	उपवन	इमला	नीरज
ध्यान	ध्वनि	दवात	बकरी	गाजर	बादल	गायब	बिक्री
कमला	अजगर	कसरत	प्रकार	बेरहम	बेजान	इमली	एलाउ
आराम	नवाब	लगाम	बेकार	गरमी	चादर	अनुनय	जहाज
बाबर	जाति	पागल	दावत	लालन	अकेली	गोपाल	प्रहलाद
आरती	अनुराग	बनाना	प्रक्रिया	बनारस	उपकार	उलचना	इमारत
एहसान	बचाना	नगीना	एहसान	बाजार	गरीबी	तितली	नारद
होलिका	दामिनी	दीवाना	ध्यान	हासिया	लावरिस	एहसान	बहमदपुर
रामचरितमानस		योगेश्वर	परमेश्वर	कामायनी	महेश्वर	अश्विनी	

निम्न को 25 लाइन टाइप करें -

बादल आया गरज कर एक बिजली उस आंगन में गिरी।

www.latestcarernews.com

शिफ्ट दबाकर मुख्य पंक्ति के ही ऊपर के अक्षर का अभ्यास करने के लिए बायें हाथ की पहली उंगली से (ा) पूरक मात्रा तथा उसी उंगली से (ै), दूसरी उंगली से (व), तीसरी से (ध), चौथी उंगली से (ळ) और उसी उंगली से (भ) स्पेस देकर दायें हाथ की पहली से (द्य) उसी उंगली से (ऽ), दूसरी उंगली से (रू), तीसरी से (स), चौथी उंगली से (ज्ञ) तथा उसी उंगली से (श्र) टाईप करें।

नोट - किसी भी आधे अक्षर को पूरा करने के लिये (ा) पूरक मात्रा का ही प्रयोग करें।

जैसे - भ + ा = भ , श + ा = श

अभ्यास - 7

निम्न अभ्यास को याद करें -

ै व ध ळ भ   द्य ऽ रू स ज्ञ श्र   ै व ध ळ भ   द्य ऽ रू स ज्ञ श्र

ै व ध ळ भ   द्य ऽ रू स ज्ञ श्र   ै व ध ळ भ   द्य ऽ रू स ज्ञ श्र

ै व ध ळ भ   द्य ऽ रू स ज्ञ श्र   ै व ध ळ भ   द्य ऽ रू स ज्ञ श्र

अभ्यास - 8

प्रत्येक शब्द को दो - दो लाइन टाइप करें -

थैले श्रम धनुष प्रदेश भूजल श्रवण क्यों कुली प्रेषण

थाल सभ्य जंगल कुशल स्नेह रूपया धारक धोती प्रदूषण

भोजन अथवा भाषा भीतर भोजन सस्ती भारत प्रेषित विशेष

आक्रमण क्यारी दौरान हिस्सा कस्तूरी इज़ाजत आकाश मारूति मरूस्थल

आवरण पैजामा कबीला उगाना अनुकरण पश्चिम हथियार उपरोक्त ज्ञानोदय

स्थापना वैज्ञानिक विधियों विस्तार बादशाह चौराहा जहरीला अभिमान विरोधी

सेनापति सुविधाओं परियोजना प्राथमिकता इलाहाबाद आज्ञाकारी स्वाभिमान्

निम्न को 25 लाइन टाइप करें -

श्री राम की कथा शुरू करों, अभ्यास से विद्या ग्रहण करो।

www.latestcarernews.com

शिफ्ट लाक दबाकर मुख्य पंक्ति के ऊपर से अभ्यास करने के लिए बायें हाथ की पहली उंगली से (ॢ) तथा उंगली से (ॅ), दूसरी उंगली से (ग्) तीसरी से (ृ), चौथी उंगली से (ज्) और उसी उंगली से (ल) एक स्पेस देकर दायें हाथ की पहली से (द्व) उसी उंगली से (छ), दूसरी उंगली से (च्), तीसरी से (ट), चौथी उंगली से (ट) तथा उसी उंगली से (न्) टाइप करें। प्रत्येक अक्षर टाइप करने के पश्चात् मुख्य पंक्ति पर अपने हाथ वापस रख लें।

अभ्यास - 9

निम्न अभ्यास को याद करें -

फ ग् ृ ज् ल   द्व क्ष च् ट ट न्   ॢ ॅ ग् ृ ज् ल   द्व क्ष च् ट ट न्

फ ग् ृ ज् ल   द्व क्ष च् ट ट न्   ॢ ॅ ग् ृ ज् ल   द्व क्ष च् ट ट न्

अभ्यास - 10

प्रत्येक शब्द को दो - दो लाइन टाइप करें -

फूल ऊन अन्त स्थल कक्षा क्षमा ऊँचा ऊपर द्वारा द्वापर
उद्योग स्पष्ट क्षमता सम्भव ज्वार चक्कर चम्मच उत्तम उत्तर तूफान
चरखा ज्यादा संरक्षण हिम्मत उत्तरी त्वरित परक्की तकदीर चक्रव्यूह उन्नति
फासला खरगोश वारिश कस्तूरी सम्मपति कल्हार वैशाखी कुम्हार सफलता नवम्बर
व्यवहार सरस्वती जगदम्बा तेजस्वनी अस्तित्व व्यंवस्था खाद्यान्न प्रभवित सितम्बर वित्तीय
आधिपत्य न्यायालय ज्योतिषी उतपादन सम्पत्ति उल्लेखनीय स्वावलम्बी

निम्न को 25 लाइन टाइप करें -

फल खाने से हिम्मती बनो, द्वेष त्याग कर स्वावलम्बी बनों

शिफ्ट दवाकर होम रो (मुख्य पंक्ति) के नीचे लाईन के अभ्यास करने के लिए बायें हाथ की पहली उंगली से (ॅ), दूसरी उंगली से (ग), तीसरी से (ढ), चौथी उंगली से (ट) तथा उसी से (ठ) एक स्पेस देकर दांये हाथ की पहली उंगली से (घ), दूसरी उंगली सें (झ), तीसरी से (ढ), चौथी उंगली से (ड) और उसी उंगली से (छ) टाइप करें। प्रत्येक अक्षर को टाइप करने के पश्चात् उंगलियों को मुख्य पंक्ति पर वापस रख लें।

www.latestcarernews.com

अभ्यास - 11

निम्न अभ्यास को याद करें -

ʿ ग ढ ट ठ ह झ ढ ड छ ʿ ग ढ ट ठ ह झ ढ ड छ

ʿ ग ढ ट ठ ह झ ढ ड छ ʿ ग ढ ट ठ ह झ ढ ड छ

अभ्यास - 12

प्रत्येक शब्द को दो - दो लाइन टाइप करें -

शर्त	डर	डमरू	शर्मा	डाकू	मूर्ति	कार्य	बब्बू	समझना
दर्शन	ठेला	इंग्लैंड	टायर	ठोकर	ग्लास	झरना	ढक्कन	डाटना
डेन्जर	झुमका	ढपली	घराना	स्टेशन	छतरी	छाता	इन्टर	डमरू
ग्लोब	सगाई	ग्रेजुएट	अच्छी	पढ़ना	स्वच्छ	कुटीर	नकछेद	ढोलक
कीर्ति	प्यार	टीवी	सविता	कनिष्ठ	रेडियो	अत्यन्त	आश्चर्य	टक्कर
डॉक्टर	प्रदर्शनी	ग्वाला	मिठाई	टमाटर	छलिया	स्फुर्ति	उपलब्धि	छतरी
उच्चारण	भारतवर्ष	ढकोसला	ढिंढोरा	इण्डिया	डाकिया	शाब्दिक	फिलिप्स	निर्धारित

निम्न को 25 लाइन टाइप करें -

झंडा उठा कर टीले पर लगा दो, डाकिया झोला ढाबे में भूल गया

> गिनती का अभ्यास करने के लिये बांये हाथ की पहली उंगली से (.) उसी उंगली से (ˌc), दूसरी उंगली से (1), तीसरी से (2) चौथी उंगली से (3) तथा उसी उंगली से (4) एक स्पेस देकर दायें हाथ की पहली उंगली से (0) उसी उंगली से (9), दूसरी उंगली से (8), तीसरी से (7) चौथी उंगली से (6) तथा उसी उंगली से (5) टाइप करें। प्रत्येक अक्षर टाइप करने के पश्चात् उंगलियां अपने स्थान अर्थात् मुख्य पंक्ति पर रख लें।

अभ्यास - 13

निम्न अभ्यास को याद करें -

.ˌc1234 .098765 .ˌc12345 098765

.ˌc1234 098765 .ˌc12345 098765

www.latestcarernews.com

अभ्यास - 14

प्रत्येक शब्द को दो - दो लाइन टाइप करें -

कृत	प्रकृति	लड़ाई	कृपालु	कुकृत्य	लोमड़ी	रोकड़	क्यों?
745	371	850	324	639	892	461	705
2659	1749	2048	3651	6750	6290	1742	5290

शिफ्ट लाक दबाकर गिनती के ऊपर के अभ्यास करने के लिए बायें हाथ की पहली उंगली से (') उसी उंगली से (ˎ), दूसरी उंगली से (x), तीसरी से (/), चौथी उंगली से (:) उसी उंगली से (=) एक स्पेस देकर दायें हाथ की पहली उंगली से (ऋ) उसी उंगली से (त्र), दूसरी उंगली से (द्ध), तीसरी से (}) चौथी उंगली से (") तथा उसी उंगली से (-) टाइप करें। प्रत्येक अक्षर टाइप करने के पश्चात् सभी उंगलियों को अपने यथा स्थान अर्थात् मुख्य पंक्ति पर वापस रख लें।

अभ्यास - 15

निम्न अभ्यास को याद करें -

ˎ ' x / : = ऋ त्र द्ध) " - ˎ ' x / : = ऋ त्र द्ध) " -

ˎ ' x / : = ऋ त्र द्ध) " - ˎ ' x / : = ऋ त्र द्ध) " -

अभ्यास - 16

प्रत्येक शब्द को दो - दो लाइन टाइप करें -

ऋण	करबद्ध	चन्द्र	राष्ट्रीय	ड्रेगर	मिट्टी	उद्देश्य	त्रयोदश
त्रिशूल	सम्भवतः	स्वतः	अतः	"दैनिक"	(शर्त)	त्रेता	पास-पास
127/9	4+4=8	7-3=4	2X8=16	3+2 = 5	नृत्य	16÷4 = 4	(स्नेह)

= : पैराग्राफ बनाने का नियम : =

सर्वप्रथम मशीन पर पहले से बने सेट को क्लीयर करना चाहिए। इसके लिए रोलर को बायें तरफ से दायें तरफ की ओर ले जायें उसके पश्चात् "टैब क्लीयर" बटन को दबाते हुए रोलर को पुनः दायें तरफ से बायें तरफ की ओर ले जायें। सेट क्लीयर हो जायेगा। इसके पश्चात् 5 (पांच) स्पेस देकर "टैब सेट" बटन को दबाने से पैराग्राफ बन जायेगा। अब छात्रों द्वारा प्रत्येक पैरा बदलने के लिए सिर्फ टेबुलेटर (नक्शावार स्थित छड़) को दबायें।

www.latestcarernews.com

निम्न को पैराग्राफ बनाकर दो पेज टाईप करें

बाली पार्थ ऋषि से विद्या एवं दाऊमाई द्वारिकाधीश श्री कृष्ण से गूढ़ ज्ञान लेकर कुरुक्षेत्र में जूझ पड़े और ठीक पाँच छः प्रखर योद्धा मौत के घाट उतारे।

निम्न पैराग्राफ में हिन्दी टंकण के अक्षर पटल (पूरे ''की बोर्ड'') के सभी अक्षर दिये गये हैं। निम्न पैरा को प्रतिदिन 3 बार अभ्यास करें।

एक बार की बात है जंगल में राजा ने बहुत बड़ा यज्ञ किया, उस यज्ञ में अपनी जीवन भर की सम्पूर्ण सम्पत्ति दान में खर्च कर दिया। उस यज्ञ में ऋषि-मुनि, महापुरुष तथा ज्योतिष आदि लोग पधारे। यज्ञ ठीक ढंग से समाप्त होने के पश्चात् सभी लोगों ने राजा को आशीर्वाद दिया। फलस्वरूप राजा के घर एक बच्चे का जन्म हुआ जिसका नाम श्रवण रखा गया छोटी ही अवस्था में अपनी योग्यता, विद्या तथा व्यवहार के द्वारा सभी को मोह लिया। श्रवण को झरना, पक्षी, इमारत तथा क्यारियाँ बहुत पसन्द थी।

अभ्यास - 1

हमारे धार्मिक पौराणिक ग्रन्थों तथा नीतिकारों ने धन के सन्दर्भ में बहुत कुछ 13
कहा है। भर्तृहरि लिखते हैं- ''जिसके पास धन है वही कुलीन है, वही पण्डित, 27
बहुश्रुत, गुणज्ञ, सुवक्ता और दर्शनीय है। भावार्थ यह है कि संसार के सभी गुण 41
सुवर्ण में बसते हैं।'' पंचतंत्र में उल्लिखित है- ''धन का प्रभाव यह है कि अपूजनीय 56
भी पूजनीय बन, अमानवीय भी गमनीय और अवन्दनीय भी वन्दनीय हो जाता है। 69
चाणक्य का कथन है- ''जिसके पास धन रहता है उसी के बहुत मित्र होते हैं। धनी 85
व्यक्ति के ही बन्धु होते हैं। वही पुरुष माना जाता है और वही जीवित।'' वेद-व्यास 100

www.latestcarernews.com

निम्न को पैराग्राफ बनाकर दो पेज टाईप करें

बाली पार्थ ऋषि से विद्या एवं दाऊमाई द्वारिकाधीश श्री कृष्ण से गूढ़ ज्ञान लेकर कुरुक्षेत्र में जूझ पड़े और ठीक पाँच छः प्रखर योद्धा मौत के घाट उतारे।

निम्न पैराग्राफ में हिन्दी टंकण के अक्षर पटल (पूरे "की बोर्ड") के सभी अक्षर दिये गये हैं। निम्न पैरा को प्रतिदिन 3 बार अभ्यास करें।

एक बार की बात है जंगल में राजा ने बहुत बड़ा यज्ञ किया, उस यज्ञ में अपनी जीवन भर की सम्पूर्ण सम्पत्ति दान में खर्च कर दिया। उस यज्ञ में ऋषि-मुनि, महापुरुष तथा ज्योतिष आदि लोग पधारे। यज्ञ ठीक ढंग से समाप्त होने के पश्चात् सभी लोगों ने राजा को आशीर्वाद दिया। फलस्वरूप राजा के घर एक बच्चे का जन्म हुआ जिसका नाम श्रवण रखा गया छोटी ही अवस्था में अपनी योग्यता, विद्या तथा व्यवहार के द्वारा सभी को मोह लिया। श्रवण को झरना, पक्षी, इमारत तथा क्यारियाँ बहुत पसन्द थी।

अभ्यास - 1

हमारे धार्मिक पौराणिक ग्रन्थों तथा नीतिकारों ने धन के सन्दर्भ में बहुत कुछ 13
कहा है। भर्तृहरि लिखते हैं- "जिसके पास धन है वही कुलीन है, वही पण्डित, 27
बहुश्रुत, गुणज्ञ, सुवक्ता और दर्शनीय है। भावार्थ यह है कि संसार के सभी गुण 41
सुवर्ण में बसते हैं।" पंचतंत्र में उल्लिखित है- "धन का प्रभाव यह है कि अपूजनीय 56
भी पूजनीय बन, अमानवीय भी गमनीय और अवन्दनीय भी वन्दनीय हो जाता है। 69
चाणक्य का कथन है- "जिसके पास धन रहता है उसी के बहुत मित्र होते हैं। धनी 85
व्यक्ति के ही बन्धु होते हैं। वही पुरुष माना जाता है और वही जीवित।" वेद-व्यास 100

www.latestcarernews.com

का कथन है, "धन बढ़ाने की अभिलाषा उन्नति का बीज है।" 111

उधर धन के विपक्ष में भी अनेक मत है। कबीर का दोहा है, "पानी बाढ़ो नाव 127
में, घर में बाढ़ो दाम, दोनो हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।" बाइबिल में लिखा 141
है- " कोई व्यक्ति एक साथ दो की सेवा नहीं कर सकता चाहे ईश्वर की उपासना 156
कर लो, चाहे कुबेर की।" व्यास जी कहते हैं- "धन की प्यास कभी नहीं बुझती, 171
उसकी ओर से मुंह मोड़ लेना ही परम सुख है।" शेख सादी की उक्ति है, "जो 187
अधिक धनवान है, वही अधिक मोहताज है।" और प्रेमचन्द की सीख है: "जब धन 201
जरूरत से ज्यादा हो जाता है तो अपने निकास का मार्ग खोजता है। यों न निकल 217
पाएगा तो जुए में जाएगा। घुड़दौड़ में जाएगा, ईट पत्थर में जाएगा, या एय्याशी में 232
जाएगा।" 233

काला का अर्थ होता है। काजल अथवा कोयले के रंग का, स्याह, कलुषित, 246
बुरा। इस तरह काला धन का अर्थ हुआ- स्याह धन अथवा कलुषित या बुरा धन। 261
काला धन वह धन है जिसे सरकारी नियमों का उल्लंघन कर अर्जित किया जाता 275
है। इसका लेखा-जोखा निर्धारित लेखा पुस्तकों में नहीं किया जाता। कर अपवंचन 287
एवं धोखाधड़ी से इस धन को संचित किया जाता है। यह धन राजकोष को हानि 302
पहुँचाता है और व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति करता है। इससे गरीब और अधिक कष्ट 316
पाते है और सामाजिक न्याय नहीं मिल पाता। इससे गरीबों के झोपड़े बिखरते हैं और 331
अमीरों की अट्टालिकाएं और ऊँची होती हैं। 338

काले धन की बहुलता के कारण-मानव जीवन के स्थायी नैतिक मूल्यों में 350
अत्यधिक गिरावट आने के कारण काले धन की समस्या सुरसा का मुख बनती जा 364
रही है। "खाए खरचे जो बचे तो जोरिए करोरि" की भावना अब नहीं रही। मनुष्य 379
आज निन्यानबे के चक्कर में पड़ा है। सोते जागते उसे पैसा ही दिखाई देता है। आज 395
वह स्वार्थ में जी रहा है। उधर आवश्यक वस्तुओं के मूल्य दिनोदिन बढ़ रहे हैं। 410
गरीबों की क्रय शक्ति क्षीण हो चुकी है। वस्तुओं का कृत्रिम अभाव उत्पन्न कर देना 425

www.latestcarernews.com

व्यापारियों की चाल है। भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है। आर्थिक अपराध बढ़ रहे हैं। क्षेत्र विशेष की सीमेण्ट कम्पनियों के कर्ताधर्ता एक दिन इकट्ठे होते हैं और दूसरे दिन सीमेण्ट में 50 रुपये प्रति बोरी की कीमत बढ़ जाती है। अमीरों की तिजोरियां और भर जाती है। उपभोक्ताओं की जेब और खाली हो जाती है। सरकारी कोष मुंह देखता रहता है। 439 453 468 483 485

अभ्यास -2

मादक पदार्थों के चंगुल में समस्त विश्व-दर्शन से हटकर जब हम शराब में अथवा अन्य मादक द्रव्यों की बात करते हैं तब हम देखते हैं कि भारत ही नहीं विश्व का एक बहुत बड़ा मानव समाज मादक द्रव्यों में डूबता जा रहा है। पूर्व युग में सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुरूप भले ही इन द्रव्यों का उपयोग चिकित्सा के लिए किया जाता रहा हो पर आज यह व्यसन बन गया है। ऐसा व्यसन जो सामान्यतः टूटता नहीं छूटता नहीं। 13 30 46 59 74 78

भारत में प्रतिवर्ष लगभग 14 खरब रुपया नशे में खर्च हो रहा है। प्रतिवर्ष लगभग डेढ़ लाख व्यक्ति धूम्रपान से उत्पन्न रोगों से ग्रसित हैं। भारत में जितने पागल हैं उनमें 60% शराब के कारण पागल हुए हैं। शराब पीने वालों में लगभग 27% मस्तिष्क रोग से, लगभग 30% फेफड़े के रोग से तथा लगभग 23% पेट के विकार से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। प्रतिदिन लगभग 20 सिगरेट पीने वाला व्यक्ति अपनी आयु के 10 वर्ष कम कर लेता है। धूम्रपानजन्य कैंसर से मरने वालों की संख्या बिना धूमपान वालों से 27 गुना अधिक है। प्रतिवर्ष दुर्घटनाओं में लगभग 60 हजार व्यक्तियों की मृत्यु होती है किन्तु तम्बाकू से 10 लाख प्रति वर्ष मरते हैं। धूमपान का असर इतना व्यापक होता है कि प्रतिदिन 200 व्यक्ति धूम्रपान करने वालों के साथ बैठने मात्र से मरते हैं। गुटका सेवन से 13-14 वर्ष के बच्चों की मृत्यु भी कैंसर से हो जाती है। 92 107 122 137 151 166 180 195 209 225 230

www.latestcarernews.com

अतः उचित तो यही है कि विनाश, मृत्यु तथा ग्लानि से बचने के लिए नशे 572
की ओर कदम ही न बढ़ाए जाएं और यदि थोड़ा बहुत कदम बढ़ गए है तो तत्काल 589
ही वापस उठा लिए जाएं । 594

अभ्यास- 3

आज सैटेलाइट और टी.वी. के माध्यम से छोटे-छोटे नगरों की महिलाएं 11
अन्तर्राष्ट्रीय जीवनक्रम के निकट आ गई हैं। पढ़ी लिखी नारियों के लिए पोंगापंथी 24
अवरोध समाप्त हो रहे हैं और भविष्य के भारत के निर्माण में उनका योगदान 38
महत्वपूर्ण होता जा रहा है। बीसवीं शताब्दी के अन्तिम और इक्कीसवीं शताब्दी के 51
प्रारम्भ की नारी अपने अंधविश्वास और अज्ञान से मुक्ति पा चुकी हैं। 40-50 करोड़ 65
लोगों के भारतीय मध्यमवर्गीय समाज में 80% महिलाएं अपने राजनीतिक अधिकारों 76
के प्रति सजग हो गई हैं। इन महिलाओं की प्रगति देखकर दांतों तले उंगली दबानी 91
पड़ रही है। वे डाक्टर हैं, वकील हैं, इन्जीनियर हैं, पायलट हैं और सरकारी 105
अफसर। होटलों का संचालन भी ये कर रही हैं और विभिन्न व्यवसायों में भी लगी 120
हुई हैं। घर की दुनिया के साथ ही बाहर की दुनिया भी ये सम्हाल रही हैं। 136

भारतीय महिलाएं आज अपने परिवारों के धनोपार्जन में सहायक हैं। उनका 147
प्रोत्साहन और उनकी सहभागिता इस दिशा में गौरव की बात है। प्राचीन संस्कृति से 161
मूल्यावान तत्वों को चुनकर वे पारिवारिक जीवन को सम्पन्न बनाने में योग दे रही 175
हैं। परिणाम यह है कि भारत के 10% परिवार अर्थात् 10 करोड़ से 188
भी अधिक लोग पश्चिम के निवासियों से अधिक धनी हैं और वहां के 201
विकसित देशों के परिवारों से अधिक सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सकते हैं। ऐसे 214
परिवारों की महिलाएं कारों अथवा स्कूटरों का प्रयोग करती हैं। उनके बच्चे अच्छे 227
स्कूलों में जाते हैं। ऐसी महिलाएं एक प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय परिवार की हो रही हैं। 242
उनकी एकाध कन्या का विवाह विदेश में होता है अथवा विदेशी भारतीय परिवारों 255

www.latestcarernews.com

से उनकी बहुएं आती हैं। ऐसे परिवारों में अनेक संस्कृतियां घुली-मिली होती हैं। 268

बीसवीं सदी के अन्तिम दशक की नारी ग्लैमर के नए युग की नारी है। सौंदर्य 283
प्रसाधनों ने वेश विन्यास को और नई साजसज्जा ने वस्त्रों को एक नया संसार दे 298
दिया है। अपने दायित्वों का निर्वाह करने में भी आज की नारी सक्षम है। हमारी कला 314
और संस्कृति ने, हमारी लोक धरोहर ने, हमारे गृह-उद्योगों ने आज महिलाओं को एक 328
नई भूमिका दी है, ऐसी महिलाओं से यह अपेक्षा की जाने लगी है कि वे अपने 344
परिवार, समुदाय, समाज, और समस्त विश्व को नई ऊँचाइयाँ देंगी। 354

संविधान के अनुच्छेद 23 एवं 24 में यह स्पष्ट किया गया है कि कोई भी 369
व्यक्ति किसी अन्य का शोषण नहीं कर सकता न ही वह किसी व्यक्ति का क्रय- 384
विक्रय कर सकता है। इस अनुच्छेद ने नारियों की खरीद-बिक्री को अवैध घोषित कर 397
दिया है। सन् 1995 के हिन्दू विवाह अधिनियम ने प्रतिलोम विवाह को भी मान्यता 411
दे दी है जिसमें निम्न वर्ग का पुरुष उच्च वर्ग की स्त्री से विवाह कर सकता है। इस 429
तरह आज विवाह के सन्दर्भ में जाति का कोई महत्व नहीं रह गया है। बाल विवाह 445
अधिनियम के अन्तर्गत 1978 में विवाह के समय लड़के की उम्र 21 वर्ष तथा 459
लड़की की उम्र 18 वर्ष तय कर दी गई है। बहुविवाह प्रथा समाप्त हो गई है। अब 476
कुमारी विवाह एवं विधवा विवाह के भेद को भी समाप्त कर दिया गया है। 1956 491
के हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के अन्तर्गत नारियों के सम्पदा सम्बन्धी सीमित 502
अधिकार को सम्पूर्ण अधिकार के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इसके अन्तर्गत 516
पिता की स्वअर्जित तथा पैतृक सम्पत्ति में लड़की को भी हिस्सा प्राप्त करने का 530
अधिकार दिया गया है। 534

आज महिलाओं के प्रति किए जाने वाले सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त 547
करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर कार्यवाही की जा रही हैं। 18 दिसम्बर, 562
1979 को "संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में" महिलाओं के विरूद्ध सभी प्रकार के 575

www.latestcarernews.com

भेदभाव की समाप्ति पर प्रस्तुत अभिसमय को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया 588
है। उन्हें 33% वैधानिक आरक्षण भले ही प्राप्त न हो फिर भी अपनी गति और 603
प्रगति से, अपने अनुभव एवं दायित्व से वे 33 से अधिक स्थान संसद एवं 617
विधानसभाओं में प्राप्त कर लेंगी। भारत सहित विश्व की महिला प्रधानमंत्रियों ने यह 630
सिद्ध कर दिया है कि देश की बागडोर को अपने हाथों में लेकर उन्होंने उसे उत्कृष्ट 646
नेतृत्व दिया है, उसकी क्षितिज को और अधिक विस्तृत किया है और प्रगति के 660
इन्द्रधनुषी रंग बिखेरे हैं। 664

अभ्यास-4

वर्तमान युग को यदि कम्प्यूटर युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। आने 13
वाले कुछ वर्षों में कम्प्यूटर प्रत्येक घर में टी.वी. की तरह दिखाई देगा क्योंकि किसी 28
का भी काम कम्प्यूटर के बिना चलने वाला नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर 44
की घुसपैठ हो गई है। व्यवसाय, नौकरी, उद्योग, व्यापार, बीमा, बैंक, रेल, हवाई 57
यातायात, चिकित्सा, इन्जीनियरिंग, शिक्षा, प्रबन्धन, सूचना तकनीक- सर्वत्र कम्प्यूटर 65
का बोलबाला है। सच तो यह है कि कम्प्यूटर अब आम जरूरत की चीज बन गई 81
है। 82

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया कम्प्यूटरों के उपयोग से जुड़ी है। कम्प्यूटर के 93
आविष्कार ने वैज्ञानिक प्रगति को एक नई दिशा दी है। विधि क्षेत्रों में विज्ञान एवं 108
तकनीक ने जो आशातीत उन्नति की है उसका पूरा श्रेय कम्प्यूटर को है। 121

मोटे तौर पर कम्प्यूटर को वैज्ञानिक ढंग से विकसित यान्त्रिक बुद्धि कहा जा 134
सकता है। मानव शरीर में मस्तिष्क जो कार्य निष्पादित करता है, वही कार्य कम्प्यूटर 148
का है। यही नहीं अपितु मस्तिष्क को काम करने में जितना समय लगता है, कम्प्यूटर 163
उससे कम समय में बिना कोई गलती किए हुए वही कार्य सम्पन्न कर देता है। 6 179
या 7 अंकों वाली संख्याओं के जोड़, बाकी, गुणा, भाग, वर्गमूल, आदि करने में 193

www.latestcarernews.com

"कैलकूलेटर" एक सेकण्ड का भी समय नहीं लेता जबकि मस्तिष्क इसे हल करने में कई मिनट का समय लेगा ।

"चार्ल्स बेवेज" ने 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सर्वप्रथम पहला कम्प्यूटर निर्मित किया जो लम्बी-लम्बी गणनाएं करके उनके परिणामों को मुद्रित भी कर सकता था।

आज कम्प्यूटर का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है। बैंकिंग क्षेत्र में यह हिसाब-किताब रखने का काम करता है। सूचना एवं समाचार प्रेषण के क्षेत्र में तो कम्प्यूटर प्रयोग से एक क्रान्ति-सी आ गई है। दूर संचार की दृष्टि से भी वे अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। विज्ञान एवं तकनीक के अनुसन्धान क्षेत्र में, परमाणु ऊर्जा, अन्तरिक्ष विज्ञान जैसे क्षेत्रों में कम्प्यूटरों ने उपयोग में नई जानकारियां प्रदान की हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में भी कम्प्यूटरों का प्रयोग विविध रूपों में होने लगा है। कम्प्यूटर का अति विकसित रूप यन्त्र मानव या "रोबोट" है जो ऐसे स्थानों पर काम करने में सक्षम है जहां मानव के जीवन को खतरा है। रेल की आरक्षण खिड़कियों पर अब कम्प्यूटर लग गए हैं। मौसम विज्ञान की भविष्यवाणियों में भी इनसे सहायता ली जा रही है। युद्ध एवं शान्ति दोनों में ही कम्प्यूटरों की विशेष भूमिका है। कम्प्यूटरों का उपयोग वर्तमान भारत की मूलभूत आवश्यकता है। कुछ लोग भले ही इस आधार पर कम्प्यूटर का विरोध करें कि इस प्रक्रिया से देश में बेरोजगारी बढ़ेगी, किन्तु यह सच नहीं है। विकसित विश्व के साथ यदि हमें कदम-से-कदम मिलाकर चलना है तो कम्प्यूटरों को घर-घर तक पहुंचाना होगा।

कम्प्यूटर के नेटवर्क को "इंटरनेट" कहा जाता है। इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटर को अपनी आवश्यकता के अनुरूप दूसरे कम्प्यूटर से सूचना ले सकने की सुविधा प्राप्त होती है। इस प्रकार सभी देशों के लोग इंटरनेट सुविधा के द्वारा पारस्परिक सूचनाओं एवं आंकड़ों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। इंटरनेट के द्वारा ई-मेल भी

www.latestcarernews.com

प्राप्त की जा सकती है तथा अलग-अलग स्थानों पर बैठे लोग आपस में "वीडियो-कॉन्फ्रेंस" भी कर सकते हैं । इंटरनेट ने दुनिया को एक परिवार बना दिया है। विश्व के किसी भी हिस्से में होने वाली गतिविधि को अब इंटरनेट के जरिए कहीं भी पहुँचाया जा सकता है। इंटरनेट पर समाचार पत्र भी उपलब्ध है तथा सूचनाओं का अथाह भण्डार वेबसाइटों पर प्राप्त है।

कम्प्यूटरों के विकास ने सूचना प्रौद्योगिकी को नए आयाम दिए हैं। संचार उपग्रह बिना कम्प्यूटर के काम नहीं कर सकते। मोबाइल फोन, सेटेलाइट फोन जैसी सुविधाएं इन्हीं संचार उपग्रहों से ही सम्भव हो सकी है।

अभ्यास-5

भारत मूलतः गांवों का देश है। आज भी हमारी कुल जनसंख्या का 80 प्रतिशत गांवों में निवास करता है। यह आवश्यक है कि ग्रामीण जनता की भागीदारी ग्राम विकास में हो और यह तभी सम्भव है जब उन्हें विकास हेतु संसाधन उपलब्ध कराए जाएं और वे इस सम्बन्ध में योजनाओं का प्रारूप बनाने एवं उन्हें क्रियान्वित करने हेतु अधिकार सम्पन्न एवं सक्षम हों। पंचायती राज व्यवस्था इसी उद्देश्य की पूर्ति करती है।

"पंचायत" का मूल अर्थ है पांच लोगों की सभा। प्राचीन काल में इन पाँच लोगों का चयन गांव की जनता ही करती थी और वे सभी ग्रामीण समस्याओं का निदान मिल-जुलकर कर लेते थे। भारत की ग्रामीण व्यवस्था में "पंच परमेश्वर" की अवधारणा बद्धमूल है। ग्रामीणों को पंच में परमेश्वर दिखाई पड़ता है अतः वे उसके निर्णय को सिर झुकाकर स्वीकार कर लेते थे। पंचायत का कार्य केवल विवादों का निर्णय करना ही न था अपितु ग्रामीण विकास की योजनाओं को कार्यान्वित करना तथा उसके लिए संसाधन जुटाना भी था।

स्वतन्त्रता के पश्चात् पंचायती राज व्यवस्था की अवधारणा गांधी जी ने प्रदान

www.latestcarernews.com

की। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 40 में राज्यों को पंचायतों के गठन का निर्देश 188
दिया गया है। दिसम्बर 1992 में पारित संविधान का 73वां संशोधन पंचायत 200
सम्बन्धी उपबन्धों पर प्रकाश डालता हैं इसमें यह व्यवस्था है कि प्रत्येक राज्य में 216
गांव तथा जिला स्तर पर पंचायतें स्थापित की जाएगी। पंचायतों को अधिक समय 229
तक स्थगित नहीं किया जा सकता तथा 6 माह के भीतर पंचायतों का चुनाव कराना 244
अनिवार्य है। सभी पंचायतों में महिलाओं, अनुसूचित जातियों को नियमानुसार 254
आरक्षण प्राप्त है, उन्हें कराधान करने की शक्ति प्राप्त है। पंचायतों का कार्यकाल 267
पांच वर्ष का है। उनका अपना बजट होगा तथा अपने अधिकार क्षेत्र की सूची होगी। 282
पंचायतों का कार्यकाल पांच वर्ष का है। उनका अपना बजट होगा तथा अपने 295
अधिकार क्षेत्र की सूची होगी। पंचायतों के चुनाव कराने के लिए प्रत्येक राज्य में 309
एक निर्वाचन आयुक्त होगा और पंचायतों को आर्थिक सहायता वित्त आयोग प्रदान 321
करेगा। लोकतन्त्र में सत्ता का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए इसी सिद्धान्त के आधार 333
पर पंचायती राज की परिकल्पना की गई है। 12 सितम्बर, 1959 को राजस्थान 346
के नागौर जिले में पंचायती राज का उद्घाटन किया। 355

पंचायतों को अपने क्षेत्र का विकास करने, योजना बनाने, संसाधन जुटाने 366
तथा पारस्परिक विवाद सुलझाने का अधिकार प्राप्त हैं। उनका महत्व किसी भी 378
प्रकार से कम करके नहीं आंका जा सकता। इससे ग्रामीणों में राजनीतिक चेतना 391
उत्पन्न हुई है और महिलाओं में जागरूकता आई है। यदि पंचायती राज व्यवस्था को 405
सुचारु रूप से क्रियान्वित किया जा सका तो वह दिन दूर नहीं जब भारत के गांवों 421
का कायाकल्प हो जाएगा। भले ही इन पंचायतों ने राजनीतिक एवं जातिगत विद्वेष 434
बढ़ा दिए हों किन्तु इनकी प्रभावी भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता। गांधी 448
जी के स्वराज की कल्पना ही इन पंचायतों से ही साकार हो सकेगी। 461

www.latestcarernews.com

अभ्यास-6

मानव के दिल को समझना जब इतना कठिन है तब सम्पूर्ण मानव को समझ 14
लेना सरल सुगम नहीं। पिछले दस-पंद्रह वर्षों में वैज्ञानिकों ने मानव जीवन के 27
रहस्यों को उद्‌घाटित करने का अथक प्रयत्न किया है। आण्विक जीव विज्ञान के दो 40
प्रतिद्वन्द्वी वैज्ञानिकों ने मानव जीनोम के संदर्भ में अनेक पत्रिकाओं में एक शोध 54
करवाया है जिसमें इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है कि मानव जीनोम तीन अरब 69
रासायनिक रेखाओं का जाल है जो यह दर्शाता है कि सचमुच ही हम क्या हैं? इन 85
वैज्ञानिकों में एक है- अमेरिकी कंपनी सेलेरा के प्रमुख "क्रेग वेटर" और दूसरे हैं- 99
"फ्रांसीसी कोलिन्स" जो कुछ विशिष्ट वैज्ञानिकों के एक अंतर्राष्ट्रीय दल का नेतृत्व 111
करता है। यह व्यक्ति अमेरिका के "नेशनल इंस्टीट्यूट आफ हेल्थ" में "नेशनल 123
ह्यूमेन जीनोम रिसर्च इंस्टीट्यूट" का निदेशक है। इसी दिन इन दोनों वैज्ञानिकों ने 136
"मानव जीनोम" संरचना का माडल प्रस्तुत किया। यह दिन था 26 जून, 2000। 149
इन दोनों वैज्ञानिक समूहों ने डीएनए (डिआक्सीराइबो न्यूक्लिक एसिड) के अरब 160
तन्तुओं का वाचन भी प्रस्तुत किया है। दोनों ने मनुष्य का व्यापक एटलस भी प्रस्तुत 175
किया है, जो यह दर्शाता है कि मनुष्य के बनने की प्रक्रिया क्या है? यह ऐसी खोज 192
है कि इसके परिणाम भविष्य में आने वाले वैज्ञानिकों का शताब्दियों तक मार्ग 205
प्रशस्त करेंगे। 207

मनुष्य के विस्तृत एटलस से अनेक महत्वपूर्ण तथ्य उद्‌घाटित होते हैं। अब 219
तक यह माना जाता था कि मनुष्य में 1,00,000 से भी अधिक जीन (वंशाणु) ग 234
"डीएनए" के तंतु होते हैं जो कमांड देते हैं। इधर इन वैज्ञानिकों का अध्ययन यह 249
कहता है कि मानव शरीर में मात्र 30,000 जीन है जो एक चूहे के बराबर हीं हैं। 266
ये एक मक्खी से तीन गुना और बैक्टीरिया से पांच गुना अधिक हैं। वेंटर के साथ 282
काम करने वाले सेलेरा कम्पनी के वरिष्ठ वैज्ञानिक "मणि सुब्रह्मण्यम ने "इंडिया 294

www.latestcarernews.com

टुडे'' से कहा था, ''यह हक्का-बक्का करने वाली बात है।''

वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न वंशों अफ्रीकी, अमेरिकी, एशियाई के मानव जीनोम अनुक्रम की तुलना करने पर अद्भुत समानताएं मिली हैं। उन्हें 10,000 वर्णों के कूट-वाचन में एक अश्वेत और एक श्वेत के बीच मात्र एक वर्ण का अंतर प्राप्त हुआ है। इस तरह यह निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्यों के बीच वंश सम्बन्धी आण्विक प्रमाण नहीं हैं और जीनेटिक की दृष्टि से वंश भेद लगभग शून्य है। इस तरह यह भी माना जा रहा है कि विभिन्न वंश के पुरवे एक ही थे और कालक्रम में होने वाले परिवर्तनों का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। जीनोम अनुक्रम यह भी दर्शाते हैं कि पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति संभवतः 1,00,000 वर्ष पूर्व हुई और यह भी कि पूर्व में किसी एक स्थान में हम सभी की एक छोटी सी बस्ती थी जहां की जनसंख्या छोटी ही थी। आज इस तथ्य को भी अमान्य नहीं किया जा सकता कि हमारा प्रथम पूर्व पुरुष अथवा प्रथम पूर्व महिला की उत्पत्ति अफ्रीका में ही हुई हो। आज जो छोटी-छोटी शारीरिक विभिन्नताए मानव शरीर में मिलती हैं उसका कारण पर्यावरण है जिसके अनुकूल मानव ने अपने को ढाला है।

जीन मानव के इतिहास और भविष्य की ओर भी संकेत करते हैं। जीनों के अध्ययन में यह तथ्य भी विदित हुआ है कि चिम्पेंजी मानव का निकटतम सम्बन्धी है। समग्र रूप से किसी भी व्यक्ति की आनुवंशिक संरचना उस जन्मकुण्डली सी है जिसमें शिशु के नाम से लेकर मृत्यु तक की घटनाएं लिखी होती हैं। मानव जीनोम परियोजना के अध्यक्ष डॉ फ्रांसीसी कोलीन्स ने अप्रैल 2000 में आयोजित गोष्ठी में यह बताया है कि अब तक मानव जीनोम के दो अरब अक्षरों की डिकोडिंग की जा चुकी है।

www.latestcarernews.com

अभ्यास-7

भारत की सबसे बड़ी समस्या है जनसंख्या विस्फोट। तेजी से बढ़ती हुई 12
जनसंख्या ने देश के समक्ष अनेक विकराल समस्याएं खड़ी कर दी हैं, जिनका 25
समाधान तब तक सम्भव नहीं जब तक जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश न लगा दिया 39
जाए। सन् 1947 में भारत की कुल जनसंख्या 35 करोड़ थी जिसमें पाकिस्तान 52
और बंगलादेश की जनसंख्या भी शामिल है, सन् 2001 में यह जनसंख्या एक 65
अरब को पार कर चुकी है। विश्व में चीन के बाद भारत ही सबसे अधिक आबादी 81
वाला देश है। यदि जनसंख्या वृद्धि की इस दर को रोका न गया तो भीषण परिणाम 97
भुगतने पड़ेंगे। तीव्र गति से बढ़ती हुई इस जनसंख्या के लिए भोजन, वस्त्र और 111
आवास जैसी सुविधाओं को जुटा पाना भारत जैसे सीमित साधनों वाले देश के 124
लिए सम्भव नहीं है। अतः यह परमावश्यक है कि जनसंख्या वृद्धि की गति पर 138
अंकुश लगाया जाए। 141

परिवार नियोजन इस बढ़ती हुई जनसंख्या पर काबू पाने का सबसे बेहतर 153
उपाय है। परिवार नियोजन का अभिप्राय है- परिवार को इस प्रकार नियोजित करना 166
जिससे अधिक सन्तान उत्पन्न न हों और परिवार के द्वारा दम्पत्ति अपने परिवार को 180
अपनी इच्छा से सीमित रख सकते हैं। बच्चों के जन्म के बीच में पर्याप्त अन्तराल 195
रखने हेतु भी परिवार नियोजन की विधियों को अपनाया जा सकता है। आज इस 209
बात को समझने की महती आवश्यकता है कि परिवार नियोजन केवल वैयक्तिक 221
प्रश्न नहीं रह गया है, अपितु यह राष्ट्रीय समस्या है और देश के उज्जवल भविष्य 236
से जुड़ा प्रश्न है, अतः इसे व्यक्तिगत इच्छा पर नहीं छोड़ा जा सकता। यदि लोग 251
स्वेच्छा से अपने परिवार को सीमित नहीं रखेंगे, तो कानून बनाकर उन्हें सीमित 264
परिवार के लिए बाध्य किया जाना चाहिए। 271

www.latestcarernews.com

परिवार नियोजन का भारत में सामान्य अर्थ यह ग्रहण किया जाता है कि 284
प्रत्येक दम्पत्ति अधिक से अधिक दो सन्तानों को जन्म दें और प्रथम सन्तान तब 298
उत्पन्न हो जब माता की आयु कम से कम 21 वर्ष हो तथा द्वितीय सन्तान के जन्म 315
में लगभग चार या पांच वर्ष का अन्तराल हो। नियोजित परिवार होने से जहां माता- 330
पिता बच्चों का पालन-पोषण भली-भाँति कर पाएंगे, उन्हें अच्छी शिक्षा दिला 341
पाएंगे, वहीं राष्ट्र की बढ़ती हुई जनसंख्या पर भी अंकुश लगेगा। पुराने समय में बच्चे 356
भगवान की देन माने जाते थे और अधिक बड़ा परिवार अच्छा माना जाता था किन्तु 371
अब समय की मांग है कि हम स्वेच्छा से अपने परिवार को सीमित रखें। यह केवल 387
सरकार का ही दायित्व नहीं है कि वह परिवार नियोज़न की आवश्यकता एवं 400
उपयोगिता से अधिकाधिक लोगों को परिचित कराए, प्रेरित करे एवं प्रोत्साहित करे। 412

सरकार ने यद्यपि इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सरकारी कर्मचारियों 424
को नियोजित परिवार रखने पर वेतन वृद्धि देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा 438
परिवार कल्याण के मद पर आवश्यक धन जुटाने का प्रयास आठवीं पंचवर्षीय 450
योजना में भी किया गया है, तथापि अभी तक अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सके 465
हैं। सरकार का लक्ष्य जनसंख्या वृद्धि की दर को 21 प्रति हजार तक सीमित करने 480
का है किन्तु यह कार्य सरल नहीं है। परिवार नियोजन को जोर जबर्दस्ती से लागू 495
कर पाना लोकतान्त्रिक भारत में सम्भव नहीं है अतः स्वेच्छा से समझा-बुझाकर ही 508
लोगों को नियोजित परिवार के लिए प्रेरित किया जा रहा है, परिवार नियोजन को 522
प्रभावी बनाने के लिए सरकार को अपने संचार माध्यमों का पूरा-पूरा उपयोग करना 535
चाहिए। ऐसी फिल्में दिखायी जाएं जो आम जनता पर यह प्रभाव डालें कि जिनका 549
परिवार सीमित है, वे अधिक सुखी हैं। 556

www.latestcarernews.com

अभ्यास- 8

दूरदर्शन (टी.वी.) का आविष्कार सन् 1926 ई. में अमेरिकी वैज्ञानिक जान 11
लागी बेयर्ड द्वारा किया गया, तब शायद किसी को यह अनुमान भी न था कि वह 27
प्रत्येक घर में अपना स्थान बना लेगा और बीसवीं सदी के समापन पर मनोरंजन का 42
प्रमुख साधन होगा। सूचना क्षेत्र में होने वाली क्रान्ति ने आज तकनीक और 55
प्रौद्योगिकी को इस स्तर पर पहुंचा दिया है कि अगले दस वर्षों में क्या होगा? इसकी 71
कल्पना भी नहीं की जा सकती। पहले हमारे देश में टेलीविजन का अधिक विस्तार 85
नहीं हो सका था। यद्यपि दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना 15 सितम्बर, 1959 को 98
दिल्ली में हो चुकी थी। सन् 1976 में जब उपग्रह द्वारा टी.वी. कार्यक्रमों को 112
प्रसारित किया जाने लगा, तब दूरदर्शन केन्द्रों की संख्या में बढ़ी। बाद में 124
सन् 1982 में एशियाड के आयोजन के समय दूरदर्शन का पर्याप्त विस्तार हुआ। 137

प्रारम्भ में दूरदर्शन का केवल एक राष्ट्रीय नेटवर्क था। बाद में मेट्रो चैनल की 151
स्थापना हुई और महानगरों के लोगों को यह विकल्प मिल गया कि वे चाहें तो राष्ट्रीय 167
चैनल के कार्यक्रम देखें और चाहें तो मेट्रो चैनल के। सभी देश में सेटेलाइट टी.वी. 182
चैनलों का आगमन हुआ। प्रारम्भ में तो डिश ऐन्टीना के माध्यम से केवल सम्पन्न 196
लोग ही विदेशी टी.वी. चैनलों का आनन्द ले पाते थे, किन्तु बाद में केबिल 210
आपरेटरों ने इसे घर-घर में पहुंचाकर सर्वजन सुलभ बना दिया। आज तो स्थिति यह 224
है कि केबिल टी.वी. के कार्यक्रमों की भरमार है-मोटे तौर पर 50 चैनल उपलब्ध 238
हैं, जिनके कार्यक्रम चौबीसों घण्टे उपलब्ध हैं। नित नए चैनल उपलब्ध हैं, यही नहीं 252
अब तो इन्टरनेट सेवा के माध्यम से आप अपनी कम्प्यूटर स्क्रीन पर देश-विदेश में 266
प्रसारित हो रहे किसी भी कार्यक्रम को आसानी से कैच कर सकते हैं। 279

आज इन विदेशी चैनलों ने हमारी संस्कृति पर हमला किया हुआ है। लोग 292

www.latestcarernews.com

भारतीयता एवं भारतीय संस्कारों को भूलकर विदेशी सभ्यता एवं संस्कृति के रंग में 305
रंगते जा रहे हैं। चारों ओर एक अंधी दौड़ चल रही है, जिसका समापन कहां होगा, 321
किसी को नहीं पता। टी.वी. ने हमारी सामाजिकता को समाप्त कर दिया। आज 334
किसी के पास समय नहीं है कि कहीं जाकर किसी के पास बैठे। पहले लोग दूसरों 350
के पास बैठकर एक-दूसरे का सुख-दुःख बांटते थे, परन्तु इस टी.वी. और उसके 363
निरन्तर चलने वाले कार्यक्रमों ने लोगों को घर की चहारदीवारी में कैद कर दिया है। 378
बच्चों की पढ़ाई चौपट हो रही है। 385

यह कला एवं संस्कृति का वाहक भी है, किन्तु दूसरी ओर आज हमारे घरों 399
में टी.वी. चैनलों का प्रकोप इस कदर छाया हुआ है कि लगता है कि यह सोची- 415
समझी साजिश के अन्तर्गत हमारे देश पर सांस्कृतिक हमला किया जा रहा है। एम 428
टी.वी., वी.टी.वी, स्टार प्लस कई चैनल सेक्स एवं हिंसा से युक्त जो कार्यक्रम 441
दिखा रहे हैं, वे हमारे युवाओं को लोकप्रिय भले ही लगते हों, किन्तु ये कार्यक्रम 456
उन पर बुरा प्रभाव डाल रहे हैं। जब हम पूरे दिन सैक्स के खुले प्रदर्शन को टी.वी. 473
पर देखेंगे तो, जब पॉप संगीत एवं नृत्य के अश्लील कार्यक्रम से आपकी नजर नहीं 488
हटेगी तो निश्चित रूप से उसका प्रभाव हमारे मन पर भी पड़ेगा और अन्ततः हमारे 503
मन में दूषित भावनाएं होंगी। 508

यद्यपि विदेशी चैनलों में कुछ ज्ञानवर्द्धक चैनल भी हैं यथा डिस्कवरी चैनल, 520
तथापि अधिकांश चैनल सेक्स एवं हिंसा प्रधान कार्यक्रम दिखा रहे हैं। आज इस 533
बात की आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि सरकार की ओर से कानून बनाकर 548
उपग्रहों के माध्यम से फैलाये जाने वाले इस सांस्कृतिक प्रदूषण की रोकथाम करने 561
के लिए प्रभावी कदम उठाये जायें। सरकार सेंसर किए हुए कार्यक्रमों को ही देश में 576
दिखाने की आज्ञा दे, ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। 585

www.latestcarernews.com

अभ्यास-9

गांधी जी एक व्यक्ति न होकर एक संस्था थे। वे एक महान् देशभक्त; प्रबुद्ध विचारक, नैतिकतावादी राजनीतिज्ञ एवं आदर्श सन्त थे। उन्होंने धर्म, नैतिकता का आचरण करते हुए कथनी-करनी में एकरूपता लाकर यह दिखा दिया कि सिद्धान्त और व्यवहार में सामंजस्य स्थापित करके ही व्यक्ति महान बन सकता है। गांधी जी पर महान विचार टालस्टाय, रस्किन और थोरो का प्रभाव पड़ा था, यह उन्होंने अपनी आत्मकथा में स्वीकार किया है। वे एक साथ गीता, बाइबिल, वेदान्त से प्रभावित थे। बाइबिल के इस वाक्य ने उन्हें बहुत प्रभावित किया- "अत्याचारी का प्रतिकार मत करो बल्कि जो तुम्हें दायें गाल पर चांटा मारे उसके सामने बायां गाल भी कर दो।" गीता से उन्होंने अपरिग्रह का सिद्धान्त लिया। वे कहते हैं "यदि कोई व्यक्ति आवश्यकता से अधिक संग्रह करता है तो वह चोर है।"

थोरी की पुस्तक "सिविल डिस्ओबीडिएंस" से उन्होंने सविनय अवज्ञा का भाव ग्रहण किया। उन्होंने अपनी पुस्तक "माई एक्सपीरियंस विद ट्रुथ" में अपने जीवन और सिद्धान्तों का जो विवरण प्रस्तुत किया है, उसी से गांधीवाद की अवधारणा बनी है।

गांधी जी ने धर्म, नैतिकता, शिक्षा, अर्थशास्त्र, राजनीति सभी विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। समाज सुधारक के रूप में "अछूतोद्धार" का उन्होंने जो प्रयास किया वह अविस्मरणीय है। सत्य, अहिंसा और प्रेम का जो सिद्धान्त गांधी जी ने दिया है वह सार्वकालिक है, अतः वह कभी अप्रासंगिक हो नहीं सकता। उनका ट्रस्टीशिप (न्यासधारिता) का सिद्धान्त बेजोड़ है। उनका विचार था कि "पूंजीपति के पास जो सम्पत्ति है, उसका वह मालिक न होकर संरक्षक है और इसलिए इस सम्पत्ति का उपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए न होकर जनकल्याण के लिए होना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने पास केवल उतनी ही सामग्री रखे

www.latestcarernews.com

जितनी उसके लिए आवश्यक है तो समाज में किसी व्यक्ति के पास कोई भी अभाव 287
नहीं रहेगा और सब लोग सन्तोषपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।'' 297

गांधीजी रस्किन की भांति औद्योगीकरण को अभिशाप मानते थे। वे कहते थे 309
कि मैं यन्त्रों का विरोधी नहीं हूँ, मैं तो उनके पागलपन का विरोधी हूँ। ऐसा यन्त्र 325
किस काम का जो हजारों लोगों को बेकार कर दे और वे भूख से व्याकुल होकर 341
सड़क पर मारे-मारे फिरें। यन्त्रीकरण से कुटीर उद्योग धन्धे चौपट होंगे तथा बेकारी 354
बढ़ेगी। वे चाहते थे कि हमारे गांव स्वावलम्बी बनें, वहां कुटीर उद्योगों का 367
विकास हो। 369

गांधीजी राजनीतिक एवं आर्थिक विकेन्द्रीकरण के पक्षधर थे। उन्होंने ग्राम 379
स्वराज की जो परिकल्पना की थी, के अनुरूप ग्राम पंचायतों का गठन वर्तमान 392
सरकार कर रही है। यह पंचायत कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायपालिका का 403
समन्वित रूप होगी और अपने कार्यों को स्वयं सम्पादित करेगी । 413

गांधीजी का विचार था कि व्यक्ति को अपने जीवन में सादगी एवं न्यूनतम 426
आवश्यकता का सिद्धान्त अपनाना चाहिए । वे भौतिक कल्याण के साथ-साथ 436
आध्यात्मिक कल्याण के भी पक्षपाती थे । उनकी अवधारणा थी कि प्रत्येक व्यक्ति 448
स्वयं के शारीरिक श्रम से उपार्जित किया गया भोजन ग्रहण करे । ग्रामीण जनता की 462
आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए उन्होंने चरखा एवं खादी पर जोर दिया । 474

गांधी जी सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते दिखाई पड़ते 488
हैं। गांधीजी की अहिंसा का तात्पर्य है-मनसा, वाचा, कर्मणा किसी को कष्ट न 501
पहुंचाना। वे कहते हैं- ''सच्चा अहिंसावादी क्षुद्रतम जीव के विनाश से भी भरसक 514
बचने का प्रयास करता है और उसके समस्त कार्य करुणा भाव से उत्पन्न होते हैं।'' 529
गांधाजी ने सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा, असहयोग एवं उपवास को अपना राजनीत्कि 540
अस्त्र बनाया। स्वतः स्फूर्त आत्मत्याग द्वारा उन्होंने जनता का दिल जीत लिया। वे 553
कहते थे कि ''सर्वोत्तम सरकार वह है जो सबसे कम शासन करती है।'' अनुशासन 567

www.latestcarernews.com

दण्ड के भय से नहीं स्वतः स्फूर्त भावना से होना चाहिए। उन्होंने रामराज्य की परिकल्पना की जिसमें जनता का सर्वांगीण विकास हो, जहां शोषण मुक्त समाज हो, जहां अहिंसा और प्रेम हो। 581 594 599

अभ्यास-10

वर्तमान समय में विश्व का राजनीतिक परिदृश्य बदल गया है। सोवियत संघ के भंग होने से शक्ति संतुलन अमेरिका के पक्ष में चला गया है और विश्व राजनीति में दो गुटों का जो अस्तित्व क्रमशः अमेरिका एवं सोवियत संघ के रूप में था, वह समाप्त प्राय हो गया है। निश्चय ही अमेरिका अपने उद्देश्य में सफल रहा है तथा अब विश्व की महाशक्ति के रूप में अमेरिका का वर्चस्व कायम हो गया है। सोवियत रूस आर्थिक मोर्चे पर संकटग्रस्त होने के कारण अमेरिकी धींगामुश्ती का पुरजोर विरोध करने की स्थिति में नहीं है ।

पचास के दशक में जब अमेरिका और सोवियत संघ दो गुटों के रूप में उभरे थे तब विश्व के कुछ देशों यथा-इंग्लैण्ड, फ्रांस, कनाडा, जर्मनी आदि का झुकाव अमेरिका की ओर था तो अनेक यूरोपीय देशों एवं अरब देशों का झुकाव रूस की ओर था। इस प्रकार सारा विश्व दो गुटों में विभक्त था। ऐसे समय में गुट निरपेक्ष आन्दोलन का प्रारम्भ भारत, मिस्र एवं यूगोस्वालिया ने मिलकर किया। नेहरू, हुसैन एवं टीटो ने मिलकर गुट निरपेक्षता का सिद्धान्त प्रतिपादित किया और दोनों गुटों से निरपेक्ष रहते हुए ऐसे राष्ट्रों का संघ निर्मित किया जो इस नीति का अनुसरण करने का सिद्धान्त स्वीकारते थे। प्रारम्भ में इसके सदस्य देशों की संख्या कम थी पर कालान्तर में यह संख्या बढ़कर सौ के आस-पास पहुँच गई।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत ने दोनों गुटों के बीच जारी "शीत युद्ध" को समाप्त करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। हम सदा से ही विश्वशान्ति के पक्षधर रहे हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू को सारी दुनिया अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में "शान्ति दूत"

12 28 44 60 75 87 93 108 121 136 152 164 177 193 207 217 229 244 259 271

www.latestcarernews.com

के रूप में ही पहचानती थी। गुट निरपेक्षता के मूल सिद्धान्तों के अनुरूप भारत ने किसी भी देश के साथ सैनिक सन्धि न करने का सिद्धान्त जारी रखा है। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की थी- "चाहे कुछ भी हो हम किसी देश के साथ सैनिक सन्धि नहीं करेंगे। किसी देश के साथ बंधना अपना सम्मान खोना है।"

गुट निरपेक्षता की इस नीति का अमेरिका ने सदैव विरोध ही किया तथापि भारत को विकास हेतु अनेक प्रकार की आर्थिक सहायता देकर अमेरिका ने परोक्ष रूप से इस सिद्धान्त को स्वीकृत ही किया है। सोवियत संघ ने भी भारत द्वारा एशिया को शान्ति क्षेत्र बनाये जाने का समर्थन किया। चीन द्वारा भारत पर आक्रमण किए जाने के बाद भी भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति का परित्याग नहीं किया। वस्तुतः इस स्थिति में भारत द्वारा किसी गुट में शामिल न होने से स्थिति विस्फोटक नहीं हुई तथा भारत की विश्वसनीयता भी तीसरी दुनिया के देशों में बढ़ी।

शान्ति और सह अस्तित्व हमारी विदेश नीति की आधारशिला है, इसे सारे विश्व ने सराहा है। चीन के साथ भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध पंचशील के सिद्धान्तों पर हमने बनाये थे, यद्यपि चीन ने विश्वासघात करके हमारी उत्तरी सीमा पर एक बड़े भू-भाग को अपने अधिकार में कर लिया। 1965 एवं 1971 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में भी भारत ने किसी गुट में सम्मिलित होना उचित नहीं समझा और अपने ही बलबूते पर इन दोनों युद्धों को जीता।

अभ्यास-11

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। देश के विभिन्न प्रान्तों में अलग-अलग भाषाओं का बोल-बाला है। हिन्दी, पंजाबी, सिंधी, उड़िया, बंगला, असमिया, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़ और मलयालम भारत की प्रमुख भाषाएं हैं। ऐसी स्थिति में कौन-सी भाषा राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित की जाये, यह प्रश्न विवाद का विषय बन गया है।

www.latestcarernews.com

किसी देश की राष्ट्रभाषा वही हो सकती है, जिसका अपने देश की संस्कृति, सभ्यता और साहित्य से गहरा सम्बन्ध हो। राष्ट्रभाषा बनने के लिए यह भी आवश्यक है कि उसे देश की बहुसंख्यक जनता बोलती-समझती हो तथा वह अन्य प्रान्तीय भाषाओं के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हो। उनके शब्दों को पचाने की क्षमता भी उस भाषा में होनी चाहिए। इस दृष्टि से विचार करने पर स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाएं केवल अपने-अपने प्रान्त में सिमटी हुई हैं, उन्हें बोलने वालों की संख्या भी सीमित है। दूसरी ओर हिन्दी का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। मोटे तौर पर हिन्दी क्षेत्र के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान राज्य आते हैं। इन राज्यों में तो हिन्दी का बोलबाला है ही, इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, कश्मीर में भी हिन्दी बोलने-समझने वाले लोग निवास करते हैं। देश के अन्य प्रान्तों में भी हिन्दी बोलने वालों की संख्या एक सीमित प्रतिशत में है। उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा को भारत की राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित नहीं किया जा सकता।

हिन्दी भारतीय संस्कृति, सभ्यता से जुड़ी हुई है, इसका साहित्य उच्चकोटि का है और जातीय गौरव को बढ़ाने वाला है। भारत की प्राचीन भाषाओं, संस्कृत, प्राकृत, पालि और अपभ्रंश से इसका निकट सम्बन्ध है। भारत की प्राचीन भाषाओं संस्कृत, प्राकृत, पालि और अपभ्रंश से इसका निकट सम्बन्ध है। संस्कृत के बहुत सारे शब्द हिन्दी में प्रचलित है और आज भी नये शब्दों का गठन संस्कृत व्याकरण के आधार पर हिन्दी में किया जा रहा है। हिन्दी का शब्द भण्डार पर्याप्त समृद्ध है तथा इसमें अन्य प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों को पचाने की सामर्थ्य भी है, अतः हिन्दी में वे सभी गुण विद्यमान है जिनके आधार पर किसी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाता है।

जिस प्रकार राष्ट्रगान, राष्ट्रीय ध्वज किसी स्वतन्त्र राष्ट्र के गौरव, स्वाभिमान

www.latestcarernews.com

एवं अस्मिता के प्रतीक होते हैं , उसी प्रकार राष्ट्रभाषा भी किसी राष्ट्र के स्वाभिमान 374
की वाहक होती है। जिस प्रकार देश के नागरिक अपने राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रीय झण्डे 388
से प्यार करते हैं, उसी प्रकार उन्हें अपनी राष्ट्रभाषा से भी प्रेम करना चाहिए। 402

भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त जब राष्ट्रभाषा का सवाल उठा तो हमारे 414
दूरदर्शी नेताओं ने एक स्वर से हिन्दी को इस पद पर प्रतिष्ठित किया। गांधीजी, 428
नेहरूजी, राजगोपालाचारी, मौलाना अबुलकलाम आजाद, गोविन्द बल्लभ पन्त 436
आदि ने हिन्दी को ही यह सम्मान देने की वकालत की। 447

भारतीय संविधान की धारा 343 के अन्तर्गत हिन्दी को देश की राजभाषा के 460
पद पर प्रतिष्ठित किया गया तथा धारा 351 के अन्तर्गत यह प्रावधान किया गया 474
है कि संघ हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास के लिए प्रयासरत रहेगा। केन्द्रीय हिन्दी 488
निदेशालय का गठन इसी प्रावधान के अन्तर्गत किया गया है तथा हिन्दी के प्रचार- 502
प्रसार के लिए सरकार की ओर से अनेक कार्य भी किये गये हैं। 514

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने का विरोध दक्षिण भारत 526
विशेषतः तमिलनाडू में हुआ। वहां के राजनीतिक दल तो हिन्दी विरोध पर ही 539
राजनीति करते हैं। "हिन्दी थोपी नहीं जायेगी" इस प्रकार का नारा देकर उन्होंने 552
हिन्दी विरोधी आन्दोलन भी चलाये हैं। कैसी विडम्बना है कि वे एक भारतीय भाषा 566
का तो विरोध करते हैं, किन्तु विदेशी भाषा अंग्रेजी के समर्थक हैं। 578

आज हिन्दी को उन तथाकथित काले अंग्रेजों का विरोध झेलना पड़ रहा है 591
जो अंग्रेजी सभ्यता, संस्कृति के गुलाम बन चुके हैं। देश की स्वतन्त्रता के बाद भी 606
वे मानसिक गुलामी से मुक्त नहीं हुए है और अभी भी अंग्रेजी का वर्चस्व बनाये 621
रखने की चेष्टा कर रहे हैं। वे अंग्रेजी के नाम पर सामान्य जनता का शोषण करते 636
हैं और सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी के पक्षधर हैं। उच्चपदासीन 650
अधिकारीगण अपनी अंग्रेजी भाषा भक्ति से अभी तक मुक्त नहीं हो सके हैं। उन्हें भय 665
है कि यदि हिन्दी में कार्य करना अनिवार्य कर दिया गया तो वे जनता को मूर्ख नहीं 682

www.latestcarernews.com

बना पायेंगे। कैसी विडम्बना है कि जो अंग्रेजी भारत के दो प्रतिशत लोग भी नहीं 697
बोल पाते, वही सरकारी कार्यालयों में छाई हुई है। 706

अंग्रेजी को पढ़े-लिखो की भाषा समझते हैं और अंग्रेजी बोलने वालों को 718
आदर-सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। वह उच्च वर्ग की भाषा समझी जाती है। यही 733
कारण कि अभी तक अंग्रेजी के पैर नहीं उखड़ पाये हैं किन्तु जिस दिन से लोग 749
अपनी भाषा के प्रति स्नेह करने लगेंगे, उस दिन से अंग्रेजी समाप्त हो जायेगी। 763
अंग्रेजी की इस स्थिति को समाप्त करना ही होगा क्योंकि अपनी भाषा की उन्नति 777
से ही देश की उन्नति हो सकती है। 785

अभ्यास -

भारत में अन्तरिक्ष, अनुसंधान का प्रारम्भ सन् 1972 में भारतीय अन्तरिक्ष 11
अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना से प्रारम्भ हुआ। विगत तीन दशकों में इस 24
क्षेत्र में भारत ने आशातीत प्रगति की है। हमने थुम्बा में राकेट लांचिग सेंटर तथा श्री 40
हरिकोटा में सेटेलाइट लांचिंग सेंटर की स्थापना की है। इसके अतिरिक्त एक्सपेरीमेंटल 52
सैटेलाइट कम्यूनिकेशन अर्थ सेंटर, आर्वी (महाराष्ट्र), राष्ट्रीय एयरनोटीकल प्रयोगशाला, 61
बंगलौर भी अन्तरिक्ष अनुसंधान के महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। 69

अब तक भारत ने सफलतापूर्वक अनेक उपग्रहों का प्रक्षेपण किया है। 80
सर्वप्रथम 19 अप्रैल, 1975 को आयभट्ट नामक उपग्रह रूसी राकेट की मदद से 93
छोड़ा गया। इसके अतिरिक्त भास्कर, रोहिणी, इन्सेट, ए.एस.एल.वी, पी.एस.एल.वी. 102
तथा आई.आर.एस. शृंखला के महत्वपूर्ण प्रक्षेपण भारत ने सफलतापूर्वक किए हैं। 113
इन परीक्षणों के फलस्वरूप अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा 126

www.latestcarernews.com

सेवायें अन्य देशों की तुलना में आधे से भी कम खर्चें में उपलब्ध हो रही हैं। 403

भारत 2005 तक ग्यारह दूर संवेदी उपग्रहों का प्रक्षेपण करना चाहता है। 415
कोरिया ने अगले पी.सी.एल.वी. के द्वारा अपने उपग्रह का प्रक्षेपण करने के लिए 428
"इसरो" से करार किया है। भारत अपने अन्तरिक्ष कार्यक्रमों द्वारा प्रक्षेपण क्षमता 441
का जो विकास कर रहा है उसका उपयोग रक्षा क्षेत्र में मिसाइलों के प्रक्षेपण में भी 457
किया जायेगा। अमेरिका इसीलिए भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान में बाधायें उपस्थित 468
करता रहा है। अमेरिका की इन समस्त रुकावटों के बावजूद भारत मध्यम दूरी की 481
अन्तरमहाद्वीपीय मिसाइल का परीक्षण कर चुका है और अब लम्बी दूरी की 493
अन्तरमहाद्वीपीय मिसाइल का निर्माण कर रहा है। 18 अप्रैल, 2001 को भारत 505
भूस्थिर उपग्रह प्रक्षेपण यान से उपग्रह को अंतरिक्ष में स्थापित करने में सफल रहा 519
है। अंतरिक्ष में 36 हजार किलोमीटर दूर उपग्रह की स्थापना से अन्तरमहाद्वीपीय 531
मिसाइल बनाने एवं प्रक्षेपित करने की हमारी क्षमता प्रमाणित हो चुकी है। आज 544
"इसरो" के बारह संगठन देश में कार्यरत हैं । 552

निश्चय ही भारत अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में दिनों-दिन प्रगति कर रहा है। 565
इससे एक ओर तो हमें दूर संचार, मौसम, आदि क्षेत्रों में लाभ हो रहा है तो दूसरी 582
ओर रक्षा क्षेत्र में भी हमारे कदम आगे बढ़ रहे हैं, अतः यह निःसंकोचं कहा जा 598
सकता है कि आन्तरिक विज्ञान में भारत का भविष्य उज्ज्वल है। अब विश्व के 316
अनेक देश उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए भारत की सहायता ले रहे हैं और भारत इस 328
क्षेत्र में धन एवं प्रतिष्ठा दोनों ही अर्जित कर रहा है । 639

विश्वकोश में ओम्बुड्समैन का अर्थ है "नौकरशाही की शक्तियों के दुरुपयोग के

www.latestcarernews.com

मंगल इनस्क्रिप्ट सीखने का तरीका

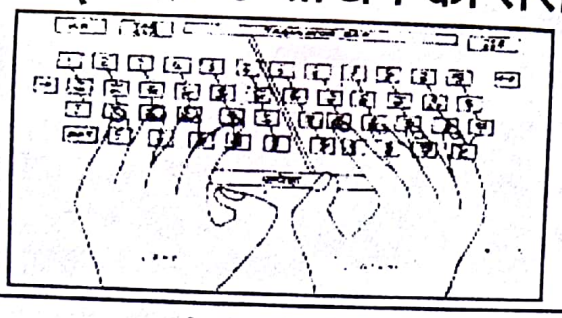

चित्रानुसार छात्र बायें हाथ द्वारा पहली उँगली को पीछे लाकर (ो) तथा पहली उँगली को वापस लाकर (`), दूसरी उँगली से (्), तीसरी से (ि), तौथी उँगली से (ु), तथा चौथी ही उँगली को आगे लाकर (प) टाईप करें। इसके पश्चात् चित्रानुसार दायें हाथ की पहली उँगली से (ट), दूसरी उँगली से (च), तीसरी से (त), तथा चौथी उँगली से (क), तथा चौथी ही उँगली को आगे लाकर (र)

अभ्यास - 1

<u>निम्न अभ्यास को एक घंटा टाइप करते हुए याद करें</u>

ो ` ् ि ु प   र क त च ट

अभ्यास - 2

<u>प्रत्येक शब्द को दो दो लाइन टाइप करें</u>

चोर रोको टोको तितर पिकर पुकर चटपट टिकट रपट पिटपिट
तुरत टेकर चोकर कुकर चक्कर पुर चोट कोक चिट पोप चेतक
रिट पिकर तोचर कोर पटक कटर कोट किटकिट चपट केक
केचर रोकट टोकट रोकत

मुख्य पंक्ति पर रखी बायें हाथ की उँगली को ऊपर लाकर पहली उँगली से (ै), उसी उँगली से (ँ), दूसरी उँगली से (ा), तीसरी से (ी), चौथी उँगली से (ू), और चौथी ही उँगली से (ब), टाईप करें। दायें हाथ की पहली उँगली को ऊपर लाकर (.), तथा (ड) , दूसरी उँगली से (ज), तीसरी से (द), चौथी उँगली से (ग), तथा (ह), टाईप करें। ऊपर अभ्यास के प्रत्येक अक्षर टाईप करने के पश्चात् प्रत्येक उंगली को मुख्य पंक्ति पर वापस रखना चाहिए।

अभ्यास - 3

<u>निम्न अभ्यास को एक घंटा टाइप करते हुए याद करें</u>

ै ँ ा ी ू ब   ह ग द ज ड .

www.latestcarernews.com

अभ्यास - 4

निम्न अभ्यास को दो दो लाइन टाइप करें

डर बाग बगीचा बेचन डोर हार हारे होरी जहाज गाजर गरज
हजारे डरपोक जगह बीच बाजार रोटी टोपी गोजर बकरी गीजर हीरा
टीचर रोबोट दौरा चौपड़ रौजा हौजा गौरी जहर जौरी गौहर बाबू
जुगाड़ टक्कर चक्कर कैदी कुबेर

मुख्य पंक्ति पर रखी बायें हाथ की पहली उँगली को नीचे लाकर ('), दूसरी उँगली से (म), तीसरी (न), चौथी से (व), दायें हाथ की पहली उँगली से (य), दूसरी से (.), तीसरी से (,), चौथी उँगली से (स) तथा (ल) टाईप करें।

अभ्यास - 5

निम्न अभ्यास को एक घंटा टाइप करते हुए याद करें

म न व ल स , . य

अभ्यास - 6

निम्न अभ्यास को दो दो लाइन टाइप करें

मानव दानव यारी याराना नीलकमल नवीन नीरज सलमाल सुलेमान
लकीर लंका मालती नल नकील वैन वीराम वीराना मालकिन
नमकीन महल नजीर जंजीर याची सामान वकील मंजीरा वजह
रासलीला रामलीला लंकापति बब्बर पक्का प्याज

www.latestcarernews.com

शिफ्ट दबाकर मुख्य पंक्ति को ही ऊपर के अक्षर का अभ्यास करने के लिए बायें हाथ की पहली उंगली को पीछे लाकर (ओ), तथ उसी उँगली से (ए), दूसरी से (अ), तीसरी से (इ) चौथी से (उ) तथा (फ) टाइप करें। स्पेस देकर दायें हाथ की पहली उँगली से (ठ), दूसरी उँगली से (छ), तीसरी से (थ), चौथी से (ख), इसी उँगली (ऱ) टाईप करें।

अभ्यास - 7

<u>निम्न अभ्यास को एक घंटा टाइप करते हुए याद करें</u>

ओ ए अ इ उ फ ऱ ख थ छ ठ

अभ्यास - 8

<u>निम्न अभ्यास को दो दो लाइन टाइप करें</u>

थाल खपरैल अमरूद छाता ठेला ठठेरा उल्लू छतरी
फल फूलमति इमली अहसान एकता थरमाकोल खजाना खीरा
छपरा फेल पंखा अचार अजगर फसल ठोकर
इज़ाजत इफतार एतराज फूफा खर्चा खोजना छत थैला
फोकस फोटो फालतू अक्सर अफसर छोला

शिफ्ट दबाकर मुख्य पंक्ति के ऊपर से अभ्यास करने के लिए बायें हाथ की पहली उंगली से (औ), तथा उसी (ऐ), दूसरी से (आ) तीसरी से (ई), चौथी से (ऊ) तथा (भ) एक स्पेस देकर दायें हाथ की पहली उँगली से (ञ), उसी से (ढ), दूसरी उँगली से (झ), तीसरी से (ध) चौथी उँगली से (घ), तथा उसी उँगली से (ड.) टाइप करें।

अभ्यास - 9

<u>निम्न अभ्यास को एक घंटा टाइप करते हुए याद करें</u>

औ ऐ आ ई ऊ भ ड. घ ध झ ढ ञ

www.latestcarernews.com

अभ्यास - 10

प्रत्येक शब्द को दो दो लाइन टाइप करें

ऊन अन्त स्थल ऊपर द्वारा द्वापर उद्योग
सम्भव ज्वार चक्कर चम्मच उत्तम उत्तर तूफान
चरखा ज्यादा हिम्मत उत्तरी त्वरित परक्की तकदीर
चक्रव्यूह उन्नति फासला कस्तूरी सम्मपति कल्हार कुम्हार
सफलता नवम्बर व्यवहर सरस्वती जगदम्बा तेजस्वनी अस्तित्व
व्यवस्था खाद्यान्न प्रभावित सितम्बर वित्तीय आधिपत्य उत्पादन
सम्पत्ति उल्लेखनीय स्वावलम्बी

शिफ्ट दबाकर होम रो (मुख्य पंक्ति) के नीचे लाईन के अभ्यास करने के लिए बायें हाथ की पहली उँगली से (ँ) तथ दूसरी उँगली (ण), स्पेस देकर दायें हाथ की दूसरी उँगली से (।), तीसरी उँगली से (ष), चौथी उँगली से (श) टाइप करें।

अभ्यास - 11

निम्न अभ्यास को एक घंटा टाइप करते हुए याद करें

ँ ण श ष ।

अभ्यास - 12

निम्न अभ्यास को दो दो लाइन टाइप करें

शर्त डर डमरू शर्मा डाकू मूर्ति कार्य
बब्बू समझना दर्शन ठेला इंग्लैंड टायर ठोकर
ग्लास झरना ढक्कन डाटना डेन्जर झुमका ढपली
घराना स्टेशन छतरी छाता इन्टर डमरू ग्लोब
सबई ग्रेजुएट अच्छी पढ़ना स्वच्छ कुटीर नकछेद
ढोलक कीर्ति प्यार टीवी सविता कनिष्ठ रोडियो
उच्चारण भरतवर्ष ढकोसला ढिंढोरा इण्डिया शाब्दिक फिलिप्स
निर्धारित

www.latestcarernews.com

अभ्यास - 13

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 - ॅ ॉ

अभ्यास - 14

निम्न अभ्यास को चार चार लाइन टाइप करें

कृत प्रकृति लड़ाई कृपालु कुकृत्य लोमड़ी रोकड़ क्यों ? कृपा कृति डॉ

अभ्यास - 15

निम्न अभ्यास को एक घंटा टाइप करते हुए या करें

~ ऍ ॅ र र ज्ञ त्र क्ष श्र ( ) : ऋ ऑ

अभ्यास - 16

निम्न अभ्यास को चार चार लाइन टाइप करें

ऋण करबद्ध चन्द्र राष्ट्रीय ड्रेगर मिट्टी उद्देश्य त्रयोदश
त्रिशूल सम्भवतः स्वतः अतः "दैनिक" (शर्त) त्रेता पास-पास

www.latestcarernews.com

पत्र नं० 3

सेवा में,

प्रधानाचार्य,
ए.आई.सी. इण्टर कालेज,
इलाहाबाद।

विषय : अध्यापक के पद पर नियुक्ति हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

सविनय विनम्र निवेदन है कि मुझे आपके विज्ञापन सख्या 3592/94 दिनांक 3.5.94 दैनिक समाचार पत्र "आज" के द्वारा ज्ञात हुआ कि आप के विद्यालय में अंग्रेजी विषय के अध्यापक की नियुक्ति हेतु कुछ पद रिक्त है। जिसके लिए मैं भी एक अभ्यर्थी हूं। मेरी शैक्षिक योग्यता एम. एम. प्रथम श्रेणी अंग्रेजी विषय से उत्तीर्ण है तथा भरवारी नेशनल कालेज में दो वर्ष कैजुअल अध्यापक के पद पर कार्य कर चुका हूं।

मेरा पूर्ण विवरण एवं शैक्षिक योग्यता निम्नवत् है :-

1. अभ्यर्थी का नाम : कमलेश कुमार
2. पिता का नाम : श्री हरी शंकर प्रताप
3. स्थायी पता : 422, दरियाबाद, इलाहावाद।
4. जन्म तिथि : 03.07.1975
5. शैक्षिक योग्यता:

परीक्षा का नाम	बोर्ड/विश्वविद्यालय	वर्ष	श्रेणी	प्राप्तांकप्रतिशत
हाई स्कूल	यू. पी. बोर्ड	1986	प्रथम	65%
इण्टरमीडिएट	यू. पी. बोर्ड	1988	द्वितीय	57%
बी. ए.	इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।	1991	प्रथम	64%
बी. ए.	इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।	1993	प्रथम	66%

6. अनुभव : भरवारी नेशनल इण्टर कालेज में 2 वर्ष कैजुअल अध्यापक के पद पर कार्य किया।
7. तकनीकी योग्यता : हिन्दी टंकण गति 40 श. प्र. मि.
   अंग्रेजी टंकण गति 38 श. प्र. मि.

अतः श्रीमान् जी से करवद्ध प्रार्थना है कि मेरी योग्यता एवं अनुभव को दृष्टिगत रखते हुए आप अपने विद्यालय में प्रार्थी को एक बार अध्यापक पद पर नियुक्त करने की महान् कृपा करें।

प्रार्थी महोदय जी से आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास रखता है कि प्रार्थी को नियुक्ति करने का अवसर अवश्य प्रदान किया जायेगा। प्रार्थी श्रीमान् का आजीवन आभारी रहेगा।

दिनांक :-
संलग्नक :-

प्रार्थी
(कमलेश कुमार)
422, दरियाबाद, इलाहाबाद।

www.latestcarernews.com

www.latestcarernews.com

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं

के लिए

Magazines,Class Notes

Printed Notes,Book PDF

Current Affairs etc.

Hindi/English में

www.latestcarernews.com

पर

Free में Download करें